: प्रमाण-पत्र :

मैं प्रमाणित करता हूँ कि शोध छात्रा श्रीमती अर्चना चौरसिया ने मेरे निर्देशन में "श्री जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द" के नाटकों का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर शोध-कार्य पूर्ण किया है । इन्होंने शोध-कार्य सम्पन्न करने में मेरे आवास एवं महाविद्यालय के पुस्तकालय में निर्धारित अवधि तक आकर मुझसे निर्देशन प्राप्त किया तथा शोध विषयक विचार-विमर्श भी किया ।

नाटककार डॉ० मिलिन्द के नाटकों पर इस शोध प्रबन्ध में एक नवीन दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत किया गया है, उनके समस्त नाटकों का लेखक ने पुनर्लेखन किया था और उसमें सम-सामयिक दृष्टि से सामाजिक,राष्ट्रीय, ऐतिहासिक तथा अन्यान्य समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में उन्हें वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए उपादेय बना दिया था । अतः शोध परक दृष्टि से इस शोध प्रबन्ध की प्रासंगिकता स्वतः उल्लेखनीय हो गई है । हिन्दी साहित्य की नाट्य परम्परा में इसका स्थान निश्चय ही महत्वपूर्ण होगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है ।

शोध प्रबन्ध में शोध छात्रा जिस निष्कर्ष पर पहुँची है, उससे न केवल वर्तमान वरन् भविष्य में भी 21 वीं शताब्दी की युवा पीढ़ी देश के नव-निर्माण, राष्ट्रीय चिंतन एवं रचनात्मक योगदान के साथ-साथ विश्व बंधुत्व की भावना से अनुप्राणित होती रहेगी ।

| डॉ० सियाराम शरण शर्मा |
पूर्व प्राध्यापक,हिन्दी विभाग,बुन्देलखण्ड महाविद्यालय,झाँसी : पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट : शोध निदेशक: तुलसी शोध संस्थान,चित्रकूट मध्य प्रदेश शासन.

विजयादशमी
दिनांक: 3 अक्टूबर,1995.